समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

● प्रकाशन दिनांक : १५ नवम्बर २०२५ ● वर्ष : २१ ● अंक : ५ (निरंतर अंक : ३४१) ● भाषा : हिन्दी ● पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

पद्म पुराण के अनुसार 'तुलसी दर्शनमात्र से पाप-समुदाय का नाश कर देती है, स्पर्श करनेमात्र से शरीर को पवित्र बनाती है और प्रणाम करने से रोगों की निवृत्ति करती है तथा जल से सींचने पर यमराज को भी भय पहुँचाती है।' - पूज्य बापूजी

संस्कृति व संस्कारों का त्यौहार, लाता सुख-शांति-समृद्धि की बहार

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू द्वारा प्रेरित

पढ़ें पृष्ठ ३

तुलसी पूजन दिवस

२५ दिसम्बर

ऐसे चिंतन, कर्म से तेरा काम बन जायेगा - पूज्य बापूजी

हे मानव ! तेरा जन्म संसार के राग-द्वेष में फँस मरने के लिए, राग-द्वेष से उत्पन्न सुख-दुःख को झेलने के लिए नहीं हुआ है बल्कि आत्मा-परमात्मा का अपरोक्ष अनुभव करके जीवन्मुक्त बनने के लिए हुआ है। इसलिए रागरहित अवस्था में पहुँचने के लिए तू प्रयत्न कर। संसार नश्वर है, परिवर्तनशील है, बदलनेवाला है इससे राग हटाता जा और प्रभु से प्रीति बढ़ाता जा तो तेरा काम बन जायेगा।

मुक्ति की अनुभूति तब ही हो सकती है जब संसार की नश्वर वस्तुओं, परिस्थितियों, व्यक्तियों एवं संसार के संबंधों में आसक्ति न रहे और आसक्ति व राग मिटाने का सबसे सरल तरीका है प्रभु का हो जाना। तू चिंतन कर : 'मैं प्रभु का हूँ... प्रभु मेरे हैं।' जब तू प्रभु का हो गया तो चिंता तेरी कैसे रही ? समस्या तेरी कैसे रही ? वह तो प्रभु की हो गयी। दुःखी व चिंतित तो वे होते हैं जिनके माई-बाप नहीं हैं, तेरा माई-बाप, तेरा अंतरात्मा तो सदा ही तेरे पास है। **गुरु तेरे साथ हैं, गुरुमंत्र तेरे साथ है, गुरुकृपा तेरे साथ है फिर भी यदि तू चिंतित रहता है तो समझ लेना चाहिए कि प्रभु के प्रति, गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण नहीं हुआ है।**

संसार से आसक्ति मिटाने का प्रभावशाली उपाय है कि हे मानव ! तू सच्चे हृदय से प्रभु की, गुरु की शरण चला जा। तुझे तुरंत वहीं से प्रेरणा, स्फूर्ति व सहारा मिलने लगेगा। कब तक तू बाहर सहारा खोजता रहेगा ? परम समर्थ परमात्मा का सहारा ले। तू प्रभु से प्रीति बढ़ाता जा। उस पर अपने-आपको छोड़ दे। अपने-आपमें निश्चिंत हो जा। कई जन्मों से तूने संसार के संबंधों से प्रीति की। तूने सोचा कि 'भाई-बहन, माता-पिता, पति-पत्नी मेरी बात मान लें...' परंतु इनमें से कोई तुम्हारी बात नहीं मानता। सुख तुम्हारी बात नहीं मानता, वह सदा नहीं टिकता। दुःख तुम्हारी बात नहीं मानता। तुम्हारी बात मनवाने-मनवाने में कई जन्म तुमने गँवाये। अब इस राग के आग्रह को छोड़। चिंतन कर : 'हे प्रभु ! हमारी बात मनवाते-मनवाते हमने कई जिंदगियाँ पूरी कीं। अब तो तेरी बात में हम राजी हैं।' यह चिंतन ही तुझे रागरहित अवस्था में ले जायेगा।

तेरे फूलों से भी प्यार, तेरे काँटों से भी प्यार।
जो भी देना चाहे दे दे करतार, हमें दोनों हैं स्वीकार ॥

तू कोई भी कर्म कर तो राग को पोसने के लिए मत कर, प्रभु की प्रसन्नता के लिए, परहित के भाव से, निष्काम भाव से प्रभु को समर्पित होकर कर। भोजन कर परंतु देहासक्ति को पोसने के लिए नहीं। रागरहित होकर भोजन करेगा तो तेरा भोजन प्रसाद बन जायेगा। रागरहित होकर संसार का कार्य करेगा तो तेरा प्रत्येक कार्य कर्मयोग बन जायेगा।

संस्कृति व संस्कारों का त्यौहार

लाता सुख-शांति-समृद्धि की बहार

पाश्चात्य चकाचौंध से प्रभावित होकर आधुनिकता के नाम पर समाज धीरे-धीरे अपने नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों और धार्मिक संस्कारों से दूर होता जा रहा है। विश्व-मानव को पतन की खाई में गिरने से बचाकर उन्नति के शिखर तक पहुँचाने के लिए ब्रह्मज्ञानी संत पूज्य बापूजी ने २०१४ से यह पर्व मनवाना शुरू किया। आज यह पर्व विश्वव्यापी हो गया है।

२५ दिसम्बर को तुलसी पूजन दिवस है जो प्रकृति-संरक्षण, संस्कृति-संवर्धन और आध्यात्मिक जागरण का पर्व है। यह केवल एक पर्व नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति के सुसंस्कारों से विमुख जन-जन को उनसे पुनः जोड़नेवाला एक अभियान है। जो इस पर्व के निमित्त तुलसी-पूजन

न्यायालय ने

तुलसी का अपमान करनेवाले के खिलाफ

कार्यवाही करने का दिया निर्देश

हिन्दू धर्म को नीचा दिखाने के लिए की जानेवालीं बड़ी-बड़ी सुनियोजित घटनाओं को भी अनदेखा कर दिया जाता है और दूसरे धर्मों की संकीर्णताओं की यदि कोई असलियत भी बताता है तो उसको बुरी तरह से कानूनी शिकंजे में फँसा दिया जाता है। इससे लगता है कि भारत को तो स्वतंत्रता मिल गयी लेकिन हिन्दुओं को नहीं मिली।

....

भारतीय संस्कृति बताती है कि प्रकृति की गहराई में उसके अधिष्ठान परमात्म-देव का अस्तित्व है। हमारे ऋषि-मुनियों ने प्राचीन काल से ही वृक्षोपासना आदि द्वारा प्रकृति से सामंजस्य रखने की सुंदर व्यवस्था समाज के सामने रखी। तुलसी, आँवला, पीपल, बड़, नीम आदि वृक्षों का पूजन भारतीय समाज का अभिन्न अंग रहा है, जिससे समाज को इनके धार्मिक, औषधीय व अन्य लाभ मिलते हैं और पर्यावरण-सुरक्षा भी सहज में होती है। इनमें भी तुलसी विशेष गुणकारी है जिसकी पूजा घर-घर में की जाती है।

भारत के सूक्ष्म ऋषि-विज्ञान से अनभिज्ञ सनातन धर्म विरोधी तत्त्वों द्वारा हमारे आस्था-केन्द्रों को तिरस्कृत करने का दुस्साहस किया जा रहा है। पिछले दिनों केरल में एक ऐसा मामला सामने आया जिसमें अब्दुल हकीम नाम के एक मुस्लिम व्यक्ति ने सनातन धर्म का

मकर संक्रांति

का आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व

यह भारत का एक अत्यंत प्राचीन, वैदिक और सूर्योपासना से जुड़ा पर्व है।

उत्तरायण के दिन से शुभ कर्म विशेष रूप से शुरू किये जाते हैं। इस दिन दिया हुआ अर्घ्य, किया हुआ होम-हवन, ध्यान-जप और दान-पुण्य विशेष फलदायी माना जाता है। उत्तरायण पर्व पर दान का विशेष महत्त्व है। इस दिन कोई रुपया-पैसा दान करता है, कोई तिल-गुड़ दान करता है। इस दिन सत्साहित्य के दान का भी सुअवसर प्राप्त किया जा सकता है। परंतु मैं तो चाहता हूँ कि आप अपने को ही भगवान के चरणों में दान कर डालो।

१४ जनवरी को मकर संक्रांति का पर्व है। यह भारत का एक अत्यंत प्राचीन, वैदिक और सूर्योपासना से जुड़ा पर्व है। सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना संक्रांति कहलाता है। यह वह समय है जब सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करता है और उत्तरायण आरम्भ होता है। इसे उत्तरायण भी कहते हैं। इस दिन से दिन बड़े और रातें छोटी होने लगती हैं। यह सांस्कृतिक व आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण पर्व है। पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है :

हम लोगों के ६ महीने में देवताओं का एक दिन और हम लोगों के दूसरे ६ महीने में देवताओं की एक रात होती है। जैसे हमारा एक घंटा बीतता है और छोटे-मोटे कई जंतुओं के लिए तो यह इतना समय हो जाता है कि उनकी आधी उम्र पूरी हो जाती है, ऐसे ही हमारे ६ महीने पूरे हो जाते हैं तब देवताओं का एक दिन होता है। तो उत्तरायण पर देवताओं की सुबह होती है, वे नींद से उठते हैं। सुबह होती है तो चहल-पहल, इधर-उधर घूमना, आना-जाना होता है। सुबह-सुबह कोई टेलीफोन

भारतवासियो ! सावधान !!

हिन्दू बच्चों व युवतियों को धर्मांतरणकारियों द्वारा बनाया जा रहा है खास निशाना !

कहीं धर्मांतरणकारियों द्वारा हिन्दू विद्यालयों में घुस के धर्मांतरण किये जाने की घटनाएँ उजागर हो रही हैं तो कहीं कॉन्वेंट स्कूलों में हिन्दू बच्चों में हमारी संस्कृति के प्रति घृणा पैदा कर उन्हें धर्मांतरित किये जाने कीं, कहीं मुस्लिम युवकों द्वारा हिन्दू युवतियों को प्यार के जाल में फँसा के उनसे यौन संबंध बना के जबरदस्ती धर्म-परिवर्तन हेतु ब्लैकमेल करने की घटनाएँ सामने आ रही हैं...

हिन्दू धर्म को नष्ट करने के लिए हमारे देश में धर्मांतरण रैकेट चलाये जा रहे हैं, जिसके चलते हिन्दू बच्चों व युवतियों को विशेष रूप से निशाना बनाया जा रहा है । इंदौर में दानिश मंसूरी नामक युवक ने शादी का झाँसा देकर एक २२ वर्षीय युवती से कई बार दुष्कर्म किया और उसके अश्लील विडियो बनाये तथा फिर वह उसे धर्म बदलने के लिए ब्लैकमेल करने लगा । लड़की ने युवक के खिलाफ शिकायत दर्ज करायी जिसके बाद पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है ।

ग्वालियर (म.प्र.) के एक विद्यालय में पिछले एक वर्ष से कुछ शिक्षक विद्यार्थियों व अभिभावकों को आर्थिक लाभ का लालच देकर उन्हें ईसाइयत

संग का प्रभाव

- पूज्य बापूजी

जयदयाल गोयंदका, जिनको सब सेठजी बोलते थे, वे कलकत्ता (कोलकाता) में गये किसी कार्य से । उनका वहाँ बड़ा आदर-सत्कार हुआ । वहाँ के किसी व्यक्ति ने उनको एक सुंदर, बढ़िया बँगले में ठहरा दिया । सेठजी को वहाँ नींद नहीं आयी, रातभर करवटें बदलते रहे । कारण कि वे थे सज्जन-सात्त्विक और बँगला था कुछ ऐश-आराम की, भोग विलास की जगह, हनीमून मनाने की जगह । सेठजी सुबह-सुबह ऐसे ही बाहर बगीचे में टहलने लगे । माली आ गया प्रातः ५ बजे तो उससे पूछा : ''भाई ! सच बता इस बँगले में कौन रहता है ?''

माली ने कहा : ''सेठजी ! इसमें कोई रहता नहीं है ।''

जरा वह हिचकिचाते हुए बोल रहा था ।

बोले : ''नहीं-नहीं, कोई रहता नहीं तो क्या-क्या होता है यहाँ, बताने में तू संकोच मत कर, मैं किसीको नहीं कहूँगा, तेरी नौकरी नहीं जायेगी ।''

बोले : ''यहाँ रात को नाच-गाने होते हैं ।''

सेठजी ने अपने मित्रों को कहा कि ''मेरे को अब जाना है, जरूरी काम है ।'' ऐसा करके वे उस मकान से रवाना हो गये ।

जब ऐशो-आराम और शराब-कबाब वाला मकान सज्जनों की नींद हराम कर सकता है तो जहाँ हरिनाम का कीर्तन, ध्यान-भजन होता है वहाँ दिल में आराम आ जाय यह तो स्वाभाविक है । जिस जगह पर भक्ति, कीर्तन, सत्संग होता है, उस जगह पर ऐसे ही बैठने से भी लाभ होता है । उस जगह पर जप आदि करने से भी लाभ होता है ।

तो जब व्यक्ति के रहने का असर मकान पर, जड़ वस्तुओं पर पड़ता है तो जीवित मनुष्यों पर उसकी दृष्टि और संग का रंग क्यों नहीं लगेगा ?

यह तो प्रत्यक्ष है कि मंच पर अगर कोई नट-नटी बैठी होती है तो हमारे मन के विचार कुछ और ढंग के होते हैं, कोई नेता खड़ा होता है तो हमारे विचार और होते हैं तथा कोई कथाकार होता है तो हमारे विचार और होते हैं व कोई परमात्मा को छूकर बोलनेवाले संत बोलते हैं तो हमारे विचार और हो जाते हैं । तो हम किसका संग करते हैं, क्या देखते हैं, क्या पढ़ते-सुनते हैं इसका खूब ध्यान रखना चाहिए ।

अंधकार को चीरते हुए

सत्य का प्रकाश सामने आ रहा है

- शशि रंजन, सोशल मीडिया विश्लेषक

सोशल मीडिया पर लोग आशारामजी बापू व उनके आश्रम के समर्थन में अपने विचार प्रकट कर रहे हैं।

मैं वर्षों से सोशल मीडिया के माध्यम से देश के जनमत और विचारधारा का अध्ययन कर रहा हूँ। हाल ही में जब मैंने संत आशारामजी बापू से जुड़ी चर्चाएँ देखीं तो यह महसूस हुआ कि जहाँ मुख्यधारा की मीडिया वर्षों से एकतरफा प्रचार कर रही थी वहीं अब सोशल मीडिया पर जनता का रुख कुछ और ही है। यूट्यूब, इंस्टाग्राम, फेसबुक और एक्स (ट्विटर) पर लोग अब केवल भावनाओं से नहीं बल्कि साक्ष्यों और अनुभवों के आधार पर आशारामजी बापू व उनके आश्रम के समर्थन में अपने विचार प्रकट कर रहे हैं।

दरअसल हुआ यह कि आशारामजी बापू के नाम को मीडिया द्वारा जब हद से ज्यादा उछाला गया तो जो लोग उनको जानते नहीं थे वे भी उनके बारे में जानने को उत्सुक हो गये। उनके मन में प्रश्न उठा कि 'आखिर इनका नाम इतना क्यों उछाला जा रहा है ?' अपनी इस जिज्ञासा की पूर्ति के लिए लोगों ने स्वयं खोज प्रारम्भ की। उन्होंने आशारामजी बापू

भारत के युवाओं का अपनी संस्कृति के प्रति
अडिग गर्व और समर्पण हो

: तत्कालीन उपराष्ट्रपति

भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने हाल ही में एक कार्यक्रम में युवाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि 'आप अपने लक्ष्य को संकुचित और स्व-केन्द्रित मत बनाइये, अपना दृष्टिकोण राष्ट्र और मानवता के लिए निर्धारित करें । इतिहास केवल उन्हींको याद रखता है जिन्होंने समाज के कल्याण के लिए जीवन जिया और काम किया । भारत अपने युवाओं से अपनी संस्कृति के प्रति अडिग गर्व और समर्पण की उम्मीद करता है ।'

राष्ट्र, संस्कृति और मानवता की सेवा जैसे गुण उन्हीं युवाओं के जीवन में दिखाई देते हैं जो पाश्चात्य भोगवादी विचारधारा, दुश्चरित्रता आदि से बचकर भारतीय संस्कृति के अनुसार संयम-सदाचार, सच्चरित्रता को अपनाते हैं, ब्रह्मवेत्ता संत-महापुरुषों के सत्संग द्वारा आत्मिक उत्थान

शारीरिक दृढ़ता, मानसिक प्रसन्नता एवं दीर्घायु प्रदायक :

मालिश

तेल से प्रतिदिन की गयी मालिश सतत कार्यरत शरीर में दृढ़ता, आघात सहने की क्षमता व प्रतिक्षण होनेवाली शरीर की क्षति की पूर्ति करती है। स्नायुओं व अस्थियों को पुष्ट कर शरीर को मजबूत व सुडौल बनाती है। मालिश से त्वचा स्निग्ध, मुलायम व कांतियुक्त बनती है, त्वचा पर झुर्रियाँ जल्दी नहीं आतीं।

शीतकाल बल-संवर्धन का काल है। शक्ति के लिए केवल पौष्टिक, बलवर्धक पदार्थों का सेवन ही पर्याप्त नहीं है अपितु मालिश (अभ्यंग), आसन, व्यायाम भी आवश्यक हैं। शीतकाल में मालिश विशेष लाभकारी है। आयुर्वेद के श्रेष्ठ आचार्य श्री सुश्रुताचार्यजी कहते हैं :

प्राणाश्च स्नेहभूयिष्ठाः स्नेहसाध्याश्च भवन्ति।

'मनुष्य का जीवन (बल) स्नेह पर आधारित है तथा उसकी रक्षा भी स्नेह द्वारा ही होती है।'

(सुश्रुत संहिता, चिकित्सा स्थान : ३१.३)

संस्कृत में स्नेह का अर्थ चिकनाई या तैल भी होता है। मालिश के लिए घी से ८ गुना अधिक तेल

स्वास्थ्य व समृद्धि प्रदायक...

...सुखमय जीवन के लिए करणीय-अकरणीय बातें तथा तन-मन को स्वस्थ-प्रसन्न रखने की कला सिखानेवाला सत्साहित्य

सस्ता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य ! पढ़िये-पढ़ाइये अवश्य !

खजूर पोषक तत्त्वों से भरपूर, सेहत का खजाना

ये वात-पित्तशामक एवं १४० प्रकार की बीमारियों को जड़ से उखाड़नेवाले हैं। शर्करा, प्रोटीन्स, कैल्शियम, पोटैशियम, लौह (iron), मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, रेशों (fibres) आदि से भरपूर हैं। तुरंत शक्ति-स्फूर्ति देनेवाले ये खजूर रक्त, मांस, वीर्य व कांति वर्धक होने के साथ-साथ कब्जनाशक तथा हृदय व मस्तिष्क के लिए बलप्रद हैं। इनका सेवन बारहों महीने कर सकते हैं।

डायबिटीजवालों के लिए अनुकूल च्यवन रसायन

❊ स्मरणशक्ति, बल, बुद्धि, स्वास्थ्य, आयु एवं इन्द्रियों की कार्यक्षमता वर्धक ❊ हृदय व मस्तिष्क पोषक ❊ फेफड़ों के लिए बलप्रद ❊ ओज, तेज, वीर्य, कांति व सौंदर्य वर्धक ❊ हड्डियों, दाँतों व बालों को बनाये मजबूत ❊ क्षयरोग (T.B.) में तथा शुक्र धातु के व मूत्र-संबंधी विकारों में उपयोगी।

देशी गाय के घी, आँवला व अनेक जड़ी-बूटियों से निर्मित

च्यवनप्राश / स्पेशल च्यवनप्राश केसर, मकरध्वज व चाँदी युक्त

❊ स्मरणशक्ति, बल, बुद्धि, स्वास्थ्य, आयु एवं इन्द्रियों की कार्यक्षमता वर्धक ❊ रोगप्रतिकारक शक्ति, नेत्रज्योति व स्फूर्ति वर्धक ❊ हृदय व मस्तिष्क पोषक ❊ फेफड़ों के लिए बलप्रद ❊ ओज, तेज, वीर्य, कांति व सौंदर्य वर्धक ❊ हड्डियों, दाँतों व बालों को बनाये मजबूत ❊ क्षयरोग में तथा शुक्र धातु के व मूत्र-संबंधी विकारों में उपयोगी ❊ वात-पित्तजन्य विकारों में तथा दुर्बलता में विशेष हितकर।

रजत मालती

शुद्ध रजत भस्म (चाँदी-भस्म) युक्त

❊ आयु, बुद्धि, नेत्रज्योति, वीर्य, कांति व रक्त वर्धक ❊ मस्तिष्क व वातवहनाड़ियों हेतु बल्य ❊ रक्ताल्पता, पैरालिसिस, हिस्टीरिया, बुढ़ापे के रोग, नपुंसकता आदि में विशेष लाभदायी

मामरा बादाम मिश्रण

❊ नेत्रज्योतिवर्धक ❊ मस्तिष्क व नाड़ीतंत्र को पुष्ट करनेवाला ❊ दीर्घायुप्रदाता व ज्ञानतंतुओं को पोषण देनेवाला

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा सामग्रीप्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ९४२८८५७८२०. ई-मेल : contact@ashramestore.com

ये ३ विडियो देखिये और खुद तय कीजिये आखिर सच क्या है !

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2024-2026
Issued by SSPO's-Ahmedabad City Dn.
Valid up-to 31-12-2026
WPP No. 02/24-26
(Issued by CPMG UK. valid up-to 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

सभी साधक-संस्कृतिप्रेमी इन विडियोज का खूब-खूब प्रचार करें।

अहमदाबाद आश्रम में सुसम्पन्न हुए दीपावली अनुष्ठान एवं ध्यान योग शिविर की झलकियाँ

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं । अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें ।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें ।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : लोक कल्याण सेतु, ऋषि प्रसाद, ऋषि दर्शन

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम प्रकाशक : राकेशसिंह आर. चंदेल मुद्रक : विवेक सिंह चौहान प्रकाशन-स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) मुद्रण-स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी